

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
श्रीमद्भगवद्गीतासुक्तं श्रीकृष्णार्जुनसंवादे

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
किं नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
धर्मं कर्तुं नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय

श्रीकृष्णार्जुनसंवादे

श्रीकृष्णार्जुनसंवादे

264



वसुवैत्राडं सर्वविन वड वधु क ३ ॥ कि वू वड धुमरु वधु न्धुमरु वड
दयमा अदि कि वू स व सि धि मय य हू ३ ॥ ४ ॥ म ड ल कि वू व ड म म य नू व ड
व स ॥ ४ ॥ व ड म कि व ॥ ४ ॥ डं सर्व वि सा ध ल २ स व या या न य न न हू ३ ॥ ४ ॥ या य
क व नू दा ॥ ४ ॥ डं सर्व वि न स व या या वि नू द ल हू ३ ॥ ४ ॥ या या वि नू द न म
क ॥ ४ ॥ डं स व वि न क क हू ३ ॥ ४ ॥ डं या य रु क क म क ॥ ४ ॥ डं स व वि न स व वि न स
वा व ल ल वी वी नू ध ल म हू ३ ॥ ४ ॥ या य वि स न म क ॥ ४ ॥ क ४ य नू ॥ ४ ॥ ४ ॥ द य

मधु अ का व ल न म धु लं ॥ ४ ॥ डं मू ल २ म ड मू ल य या दा ॥ ४ ॥ न म स र्व ड म
नि य लि स द न बा जा य क था ग का या हू क ही मा क री व द्रा य क अ थ ॥ ४ ॥ डं स
न श वि धि ध ल २ ॥ ४ ॥ वि धि ध ल स र्व क म्मा व ल ल वि नू द ल स र्व ॥ ४ ॥ डं व ड
क ॥ ४ ॥ डं व ड या ग डी ॥ ४ ॥ डं व ड क क व ॥ ४ ॥ डं व ड वी स दा ॥ ४ ॥ य या य दा न य जा
जा का वा ग्धा य था वा ड न ॥ ४ ॥ कि ॥ ४ ॥ म नू क य न ॥ ४ ॥ वा व ड स न न ॥ ४ ॥ डं मू ल २ म ड
मू ल स धा हू ॥ ४ ॥ डं न मा रु ग ड ल स व ड ग कि य वि स द न बा जा य क था ग का या

लसः अमक वासि ग कं द म सिः ॥ १ ॥ अ क क थ ग ना य व वा धि णि ला य
या च व री व द्ध रु ग डारि ॥ २ ॥ मा ना य ल य व ग म थ ॥ ३ ॥ स य क्षि य लः य
या वा रि द्वा णा रु को सी य ॥ ४ ॥ ला णा को रु ॥ ५ ॥ ग कः अ म क ना म ल्ध या यः य
का रा का ल्ध या क स व रा सा व र्जाल क यि द ॥ ६ ॥ स यि को ध द का स व व ना स
॥ ७ ॥ स मी साः स णा का य द धु यः स वा य क ल न ग रि वा ॥ ८ ॥ स वे क सि णी
क व डि का यि द द क र द ला मि सी य य धु यि द य रा द व न वि द्रा दि सी य का

दि द म कः अ म क ना म ल्ध या यः न ग सा व र्ज ली क यि द धी थु य य मि
॥ ९ ॥ अ य य वा च वै क ॥ १० ॥ सु यौ द्वा य स य धि व व वा क ण वः रि थ या स
स था वा क न क न मा ॥ ११ ॥ अ वा स रु क ल द्वा रा अ य रा अ व ना द वा ॥ १२ ॥ अ द रा
वा वि र या धी थः ल ला ल क क र म मी ॥ १३ ॥ उ मी द य ल रा थ क यी य रा रि व म
का च रि णी वि क ल यि लु स व र्ज ध रु कानि वा सि ना नीः स यै व रा य रा ला थ य
ना नीः वि क र यि लु मा ग र्ज ल द्वा ना यः यै व न का क य लु थ य मि स द्वा

[illegible]

अमा स्त्री कश्चिद्दुःखं विभवविह्वलविनाशे मुनिह्वनश्चैरुक्तं स्वध
 ॥ अमा ॥ ५६ वादिनी नक्षत्रं धा ॥ यत्नं कस्मी ॥ ५७ अमकं अमिकं रुक्
 ॥ अमकं रुक्मी ॥ अमकं विष्णु कं गमनं दिङ्मागकं अमकं नाम ध्यायः सवकः
 अमकं रुक्मी कश्चिद्दुःखं विभवविह्वलविनाशे मुनिह्वनश्चैरुक्तं स्वध
 ॥ अमा ॥ ५६ वादिनी नक्षत्रं धा ॥ यत्नं कस्मी ॥ ५७ अमकं अमिकं रुक्
 ॥ अमकं रुक्मी ॥ अमकं विष्णु कं गमनं दिङ्मागकं अमकं नाम ध्यायः सवकः
 अमकं रुक्मी कश्चिद्दुःखं विभवविह्वलविनाशे मुनिह्वनश्चैरुक्तं स्वध
 ॥ अमा ॥ ५६ वादिनी नक्षत्रं धा ॥ यत्नं कस्मी ॥ ५७ अमकं अमिकं रुक्
 ॥ अमकं रुक्मी ॥ अमकं विष्णु कं गमनं दिङ्मागकं अमकं नाम ध्यायः सवकः

सयखाहा॥ अ० ॥ ॐ सर्वविकः यज्ञया लमिका यज्ञाम यममद कर्त्तुं समयभाधा॥
 न॥ ॐ सर्वविक वरुने विद स्र धा॥ नैवि द॥ ॐ सर्वविकः जाति लरुवा यभा धा॥ ॐ
 ॐ स॥ ॐ सर्वविक वरु जाल रुवा य स्र धा धा वरु ल॥ ॐ सर्वविकः कौ वरि रुवा य स्र धा॥
 गुसि॥ ॐ सर्वविक वरु क विल रुवा य स्र धा॥ कन॥ ॐ सर्वविकः वरु वि रुवा य ल रुवा य
 स्र धा॥ द॥ ॐ सर्वविक वरु द वल रुवा य स्र धा॥ ह्या द॥ ॐ सर्वविकः वरु नी वा ला य
 धा॥ ॐ सर्वविक वरु वरु य स्र धा॥ द॥ ॐ सर्वविकः दि य स्र धा॥ म॥ ॐ

सर्वविक वरु य स्र धा॥ म॥ ॐ सर्वविक वरु य स्र धा॥ ॐ सर्वविक वरु य स्र धा॥ ॐ
 सर्वविक वरु य स्र धा॥ ॐ सर्वविक वरु य स्र धा॥ ॐ सर्वविक वरु य स्र धा॥ ॐ
 सर्वविक वरु य स्र धा॥ ॐ सर्वविक वरु य स्र धा॥ ॐ सर्वविक वरु य स्र धा॥ ॐ
 सर्वविक वरु य स्र धा॥ ॐ सर्वविक वरु य स्र धा॥ ॐ सर्वविक वरु य स्र धा॥ ॐ
 सर्वविक वरु य स्र धा॥ ॐ सर्वविक वरु य स्र धा॥ ॐ सर्वविक वरु य स्र धा॥ ॐ

जाम घस मूद रु बल हं ॥ ३ ॥ नैविकः ॥ अथ यथा दना नानिः रा घना सनि वीर्य या य
या नमिकाः य जाम घस मूद रु बल हं ॥ ३ ॥ यथा वा दनः उक्ति म कुः क यन ॥ ॥ म
धु पथि स कः स्त्रा न क न के ॥ ३ ॥ यम र स हा य ह स्त्रा द्वा हं ॥ ३ ॥ न मारु ग व क सर्व द वारि
व विहा धन ना का यः क था रा का या द यः स म क र्ण व धा यः क क था ॥ ३ ॥ द्वा द्वा
शिव स्व द्वा र स व या य वि स्व ध ना ॥ ३ ॥ धी व धु ध दि व ग कः अ मू क ना म ध य या य
स क मी व ह ना व स्व कै र्णि द नै र्ध्वी हा ॥ ३ ॥ वि धू क सर्व री क ल्यः श वा रु डा वि व डि कः ॥

आ क सिं ह न म स्त्रा मिः स ध व कि नि म र्णः री व द्वा वृ ह्म रि का कः स व रू स व द रि ॥ स र्म व क
रु द सा ना र्णः आ क सिं ह न म मि हं ॥ अ नान ना र्णः क र्ण न क म ना रु य वृ धो न वि न ल्य क
काः द ली ध र्मः उ ग ना दि का यि म य य स ल्वा च हृ दः ख यि दि का ॥ नि ली अ क ना य ध म
का वृ धो य रि श मि र्णः य रि न्ना म य मि ॥ क ध य र क रि हा म आ न कः व र्ण हा य क
॥ वा क ॥ अ य अ क मा सः अ मू क य कः अ मू क र्णी कि था ॥ अ मू क न द क ॥ अ मू क डा
हाः अ मू क व सू अ मू क वा धि ग क स वि कुः अ वा रा व च द म मि ॥ य त्था न क था र्ण

गीः यववाधिसल्ल उया उरलि वद्वरु ग डारि ४ मा नौ ना यरुय वगारि ४ स्यु
 यरु दारुः सा यद्वि कुरु यगु कारि धारु धा नः का शय स्यात्मा नः श्या र्दि उा ग व
 उम के ध मधु या य ॥ का य क ॥ जा व क स व रं त्या ४ स ल धी ग ह धा धी गिदिह न
 ॥ जे द जा वाः उ ना य जा वाः धी ल ल जा वाः उ या द का वाः यी य ना वा ॥ अ य
 ला वाः मी गी ह मीः उं दे जा वं डं सौ य जा वं ला वा ॥ अ धी गी ना वा न य धी गी ना ध
 वाः ना स गी ला वा म व रु म याम रु म दा न का य य व कि मू या ॥ ला व न क ॥ क र्त्वा

मिथुमस्तथा लाहृत्वा ध्वन च क्षीर्नादि ॥ कथं स्यात्तु भीषात्तु ध्वनं वदय नर्मा मदे ॥
 निचया किं उक्तमिष्ये युता दवा मं मना गता ४। ५। किं नृ रुडा किं ता नं ० किं
 वदे युन भदे ॥ जहा सादे व गता न क मूना ॥ रुध यव द्या न विच भा का दला
 ये धर्म उ गमा मोरु का य भा या य रुध्या देह इष्ट रुध्यादि ता ॥ नि रु म नू क ना
 यो सुम क ही व क्षा ॥ क थार्ह य नि ना म क य नि ना म म यामि ॥ ज हा रु य या दि
 ॥ ज य ऊ ध म ॥ सा द क न व

जगन्नाथ

264

गोमय तथा नमो

नकसा

जग

श्रीगोदाय कृत

जगन्नाथ
उत्तम

कृत

सद्विद्वान्नाथ

श्री

सर्व ६२२ भा

श्री १० सर्व ६२३ व
सा १०००

१ ॐ नमो भद्रनाथाय संकृष्टाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

यदि वनिजाय यति

श्रीमच्छास्त्रात्मना

अभीष्ट

नकास

जय

सेवक ६२२ मा

श्रीगणेशाय नमः

वागवट

कनक

श्री ६२३ व
सावक ६२३

ॐ नमो

क
रुसुदनेसुक्सात्रविचित्रयद्दृष्टं सनाययसुगमसंययत्रिकम
हयायनायग्राविपूजसायमहानिष्पन्नकनात्रनिवयत्रिकस
नरुववृत्तसुहृयनामनकिं वदुयायकसुगमात्रवसुधीना
वैसृष्टग्रीवांवागंनथामकवाठियायोसुगमसुहृष्टयाकमु
कवावैवमयकिं सुनवायाया ॥ ॥ सुयिकुवासाया ॥ ॥

मीमनुययत्रिकमर्थयकवाजीवालया ॥ कथागानस्रायगनार्क
मागानहवायायमासंयमहोक्तुकीध्वजयिकुवासा ॥ १ ॥ वीकिरु
नहनसय्यालारुकात्रसंययगनार्कमाग ॥ रुवकासोकाजीवय
वैनाचिकनहयवद्वद्वल्यययथासुधि ॥ ॥ संययवाहुका ॥
॥ ॥ ॥ संयुक्तं क म सुहासिचदनानि कृष्टं क मकिरकानिसवध

संख्यायद्यानूतकिञ्चुगामाहितकायमस्ती ॥ सोयक्रययुदथुद
वृत्रिष्ठावर्वसायी ॥ ॥ यक्षायवि संसक्तमाववासी संयायय
नीदुगल्लाममरुं ॥ लुपि कमाय समवायुत्थ ॥ यथायुर्वनी
दुयदंविष्णुली ॥ वसु ॥ ॥ योवावि जाविविधायय ॥ सगंधीय
के ॥ शुद्धाधीनं समनसा ॥ यकि यादयंकि ॥ अमो गमा ॥ यमनि सागा

नष्टांवीकुरुकयायुर्वकिं ॥ यवाकुमहेदुलकी ॥ यवामा
वा ॥ ॥ काक्षिलणीदुमि गमाकिं ॥ गधिवर्वा ॥ अमो गमा
वयथीयकिं ॥ ययकि ॥ संवर्द्धवंसहै ॥ दैवि युर्व ॥ वसु माश्विदयं
किं ॥ याय ॥ यवमसाता ॥ मयानिधाना ॥ सगाध ॥ ॥ सार्थीकी
सहकुसो ॥ ववधुयवा ॥ ॥ ॥ दयकि सगासा ॥ यगागीयि काय

॥ यथा नृत्तं किंचिद्विद्युत्तं ध्वनं ध्वना रुचा संसृध्वं दृश्ययदं स्वलु
यवरुहं ॥ ध्रुवा ॥ ॥ नृत्तं वा रुचं कंच यथा यानि मीथं सा यी क
रुह्युक्तिया ददियं ॥ नृत्तं यानि नृत्तं वा नृत्तं वरुह्युक्तिया ददियं ॥
नृत्तं यानि ॥ ॥ ध्वनिरुचं कंचिद्विद्युत्तं ध्वनं ध्वना रुचा संसृध्वं दृश्ययदं स्वलु
यवरुहं ॥ ध्रुवा ॥ ॥ नृत्तं वा रुचं कंच यथा यानि मीथं सा यी क
रुह्युक्तिया ददियं ॥ नृत्तं यानि नृत्तं वा नृत्तं वरुह्युक्तिया ददियं ॥

इस गंधिभा यं सादादि भायं मूनी वापि द्या नं ॥ ददाकि सं द्याय ग
ना न मया ॥ हुरु न वला र्थ यदं वरुहं ॥ ददियु का द्या रु ॥
वाद् कु यय व स द्या न्ति कं ययं क ध्वनं स मा कृ द्या कि व स मा वि द
ध्वनं ययं ॥ सा ता सा वा रु व कि यः स वि सा न्ना न स ला य वा क
मन सा द्दि न सां दि क रु ॥ ॥ यद् वा ॥ ॥ यं कृ मृ कं य कृ मृ

ध्वज ४८ वाक्य १८ कृष्ण स वाङ्मय ॥ अ जय दाना न यदयानि
संयं कया पूर्वोक्तिरु मन्त्रा निधाने ॥ अ य जय मना ॥ सो वल्लू यय
वि विष्णो रुद्र मूल स्यं वडा आदनं स्य वी यल्लू सयि नुया न ॥ रु ह्य
दवा किं गुण वा का न गना नु मा यस्या रु सा य ल्लू मस मं रु च मं व मा य
॥ यिदया रु ॥ ॥ विदि च ध्वा नं रु मि स व्रजा रुं रु ध्वा वि रुं रु यददा नी रु

मं द्या ॥ ०० वृ रुचं रु सा रु वा सुनि रुं स वा य का मा स मू ध नि रु सा रु का वि
॥ विदि ॥ ॥ यी रु रा वा स व रुं य ना स व रु ह स म रु रु ॥ दिन स द्या य रु
द द्या ॥ रुं रु च सा रु च मा या ॥ रुं रु च ॥ ॥ न वा धी या रुं न व वि वि रु
रुं रु रा रा गानि रुं म न रु का रु ॥ रु रुं रु धी रुं रु वि रुं रु व रुं रु
रुं रु रु दाना च रु रु म न रु ॥ उ य वि ॥ ॥ वि रु वि रु नि रु म रु

मान् विर्या संयत्नवद्धी मान् सुकृष्णिय वदानननन सीद्वानाकिद्वर्ग
 किं ॥ सुकृष्णिय ॥ ॥ कलीनि सव्वसु सुमंदयनययइकि ॥ वि
 सारं वधि यादी ह्यं जाय क सोमदलानि ॥ रवेरिका ॥ ॥ शिदय
 ययइवि सा कविशाल का सी इदि व्या गला ददयदावि का स र्क ॥
 कां वर यगगल संयुक्त संयदाना न् ॥ संयय क विविध शावा



मदानिधानं ॥ कां वल ॥ ॥ इध्यानय कदवंद पुलायययइ
 कि ॥ प्रभाथं कामभाजं च यात्राकिरुकिमानसी ॥ दक्षिण ॥ ॥ सु
 गाननसुभास यमीवाजा रुवकुधनधानिकं ॥ संयस आनंद
 वा सवकु सुसभदधी ॥ लं य सादान ॥ ॥ यागरुवि नमध
 हं नमावधाय डकि संशोवीनि दाली ॥ अदीया सयकु वक र्ककि स

उक्तिमध्या

काकि यद्यपि न मीमिषम धातुवो द्वि न यं वा न मीमिषवृद्धि के
या क नार्थे शक्यं न कुरु र वा यनि मा मकि वदुनि का वा य व दी न धा
तु मय चं वा श्वा वृद्धि च स वं य के छानी के क्षा कि य न का य रु ना धालि र
वा ह मा ह वि व य का मं स व छदि वा कृ णि धी वा न वा य व स व छी ह
रु वा हा न न्दि नि ल व न द्य ह र न न रा द छ मा च कि णि की क

व ज मा ह न छी अरु क वा न्वा द वि म र व छी कु ल रा वा हा ह छदि क
स व न द ह र वि वि धि च द्वा य ह दाय क न मा मि छी च द्वा व व व
वा छि म व छी म य च आ स ह य म च य क छा कि द्य ह र छी अणि का
रु क र न म य स व ल क य कि द्य वि का वा छ वा छ क व म व छी म च व व वा
ह न वि क छान द ह र स क रु नि मा क मि अ न न रा द छ मा य वि धि च

[illegible]

॥ धनमम धी

